शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह
फरवरी,
2022

सप्तम
वर्ष
अंक -9

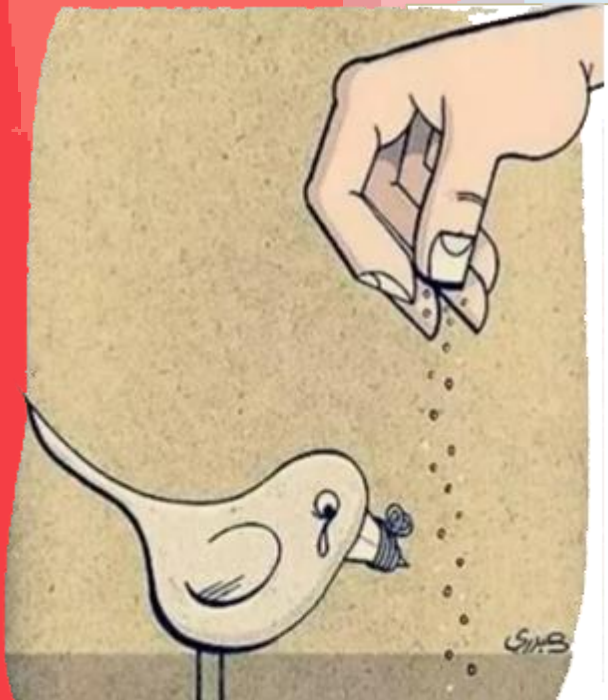

आठ वर्ष तक हमारे स्कूलों में बिताने के
बावजूद अभी भी
पढ़ने के मामले में हमारे **10%** बच्चे
कक्षा **पहली** के स्तर पर
गिनती के मामले में
आठवीं के केवल **40%** बच्चे **ही 1-99**
तक की गिनती जानते हैं!

**कैसे आउटकम्स को सुधारें, चिंतन करें
अपने स्तर पर एक्शन लें!**

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

आपसे अनुरोध

चर्चा पत्र के इस अंक में हम शिक्षकों को लाकडाउन एवं ग्रीष्मावकाश के दौरान हम अपने प्रोफेशनल डेव्हलपमेंट हेतु क्या-क्या कर सकते हैं, अपने कौन कौन से कार्यों को व्यवस्थित कर सकते हैं, लाकडाउन के दौरान बच्चों का सीखना जारी रखे जाने क्या क्या किया जा सकता है, आदि की जानकारी साझा कर रहे हैं। शिक्षकों को जब बच्चों के बिना ही स्कूल में बैठना हो तो ऐसे समय हमें अपना समय कैसे बिताना चाहिए, इस पर आपकी ओर कुछ सुझाव चर्चा पत्र के माध्यम से उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

एजेंडा एक: समुदाय की सहमति/सहयोग से मोहल्ला कक्षाएँ

गरियाबंद से **श्री भागचंद चुतुर्वेदी** **(9755857964)** का सुझाव है कि शिक्षक मोहल्ला में जाकर छोटे समूह में बच्चों को कार्य दे सकते हैं। विद्यार्थियों के माता पिता को प्रेरित कर घर-घर मे विद्यालय का वातावरण निर्मित कर सकते हैं। पालकों एवं शाला समिति एवं पंचायत पदाधिकारियों के सहमति एवं सहयोग से गाँव के पढ़े लिखे युवक-युवती के माध्यम से छोटे-छोटे समूह में शिक्षण कराया जा सकता है।

अपने शाला प्रबन्धन समिति से मोहल्ला कक्षाओं के संचालन की अनुमति लेकर स्थानीय स्तर पर बच्चों के सीखने में सहयोग देने के इच्छुक साथियों की पहचान कर उन्हें बच्चों को सिखाने की जिम्मेदारी देते हुए सहयोग किया जा सकता है । शाला के बच्चों को उनके आवास/ बसाहट/ कक्षा के आधार पर छोटे-छोटे समूहों में बांटकर मोहल्ला कक्षाओं में सीखने में सहयोग हेतु शिक्षा सारथियों की पहचान कर उन्हें जिम्मेदारी दी जा सकती है। छोटे-छोटे समूह में बांटते समय यह बेहतर होगा कि समूह में अलग-अलग कक्षाओं या अलग-अलग स्तर के बच्चे हों ताकि वे भी एक दूसरे से सीख सकें क्योंकि एक दूसरे से सीखने (peer learning) से बच्चे ज्यादा अच्छे से सीख सकते हैं। शाला के शिक्षक के रूप में आप बच्चों की नियमित पढ़ाई एवं शिक्षा सारथियों को सीखने में बेहतर सहयोग देने हेतु मेंटरिंग कर सकते हैं।

एजेंडा दो: समुदाय के सहयोग से बच्चों को नियमित कहानी सुनाने शेड्यूल

जशपुर से **श्री रामेश्वर प्रसाद भगत** **(7000189154)** बच्चों को उन्हीं की भाषा बोली में स्तर अनुरूप मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक कहानियों का अनुवाद कर उन्हें पढ़ने हेतु सामग्री उपलब्ध कराए जाने की वकालत करते हैं। उनका मानना है कि बच्चों को उन्हीं की बोली भाषा में कहानी उपलब्ध होने से वे जुड़ाव महसूस करेंगे और कहानियों के माध्यम से जीवन कौशल, महापुरुषों की जीवनी, देश भक्ति, सदाचार, इत्यादि महत्वपूर्ण जीवन कौशल को मजेदार ढंग से आत्मसात कर सकेंगे।

श्री रामेश्वर ने स्टोरीव्हीवर वेबसाईट में साठ से अधिक कहानियों का कुडुख भाषा में अनुवाद किया है। उन्होंने इन कहानियों को क्यू-आर कोड में भी विकसित किया है। अब ये स्थानीय लोगों से इन कहानियों को सुनवाते हुए उसके वीडियो बनाकर साझा करने की योजना बना रहे हैं ताकि इनके लाकडाउन के समय का उपयोग हो सके। आप भी ऐसा कर सकते हैं।

मूलभूत भाषाई साक्षरता के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कहानी एक महत्वपूर्ण साधन है। छोटे बच्चों को कहानियाँ सुनना और उस पर अपने प्रश्न रखना बहुत अच्छा लगता है। आपको उनके इस रूचि का लाभ लेते हुए समुदाय से अधिक से अधिक सहयोग लेकर बच्चों को कहानियाँ सुनाने का कार्य प्रारंभ किया जा सकता है। इसके लिए बहुत अच्छे से स्थानीय कहानियाँ सुनाने हेतु कुछ कुशल बुजुर्गों की पहचान कर सकते हैं। उनसे अनुरोध कर एक निश्चित समय और उपयुक्त स्थान निर्धारित कर बच्चों को कहानी सुनने एकत्र किया जा सकता है। कहानियाँ पूरे हाव-भाव के साथ सुनाई जानी चाहिए। बच्चों को कहानी सुनते समय कोई शंका हो तो उन्हें बिना डरे पूछने का अवसर देना चाहिए। कहानी सुनते समय बच्चे जाने-अनजाने में भाषा के बहुत से पहलुओं जैसे शब्दज्ञान, उच्चारण, वाक्य रचना एवं व्याकरण के उपयोग का व्यावहारिक ज्ञान ले लेते हैं। बच्चों को भी अपने मन से कहानियाँ बनाकर एक दूसरे को सुनाने का मौका देना चाहिए।

एजेंडा तीन: बच्चों का सीखना जारी रखने नवाचारी प्रयास

गरियाबंद के **नीता सार्वा** **(6264496868)** के अनुसार लाकडाउन के दौरान स्कूल में विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों के अभ्यास प्रश्नों का सरलीकरण करके रखना चाहिए एवं विभिन्न नवाचारी गतिविधियों का संग्रह कर समय पर उपयोग हेतु रखना चाहिए ताकि बच्चे खुद ही सीखते समय आनंद का अनुभव कर सके।

हम जैसा पढ़ाते रहे हैं तो हमें वैसे ही परिणाम मिलेंगे जैसा पहले भी मिलता रहा है। हमें अपने सिखाने के तरीकों में परिवर्तन करते रहना चाहिए ताकि हम यह देख सकें कि क्या करने से बच्चों का सीखना पहले से बेहतर हो सकता है। हमें निरंतर नए नवाचार करने की ओर सोचते रहना होगा, ध्यान देना होगा और उसके परिणामों पर नजर रखनी होगी।

कमीशी बाई थियेटर
प्रस्तुति
दो बैलों की कहानी

पिछले लाकडाउन के दौरान शिक्षकों ने बच्चों का सीखना जारी रखने हेतु विभिन्न प्रकार के नवाचारी तरीकों के बारे में सोचकर उसे लागू किया। उनके नवाचारों एक आधार पर मोहल्ला कक्षाएं, मोटरसायकल गुरूजी, लाउडस्पीकर स्कूल, मिस्ड काल गुरूजी, बुलटू के बोल, केबल टीवी से पढ़ाई, ब्लू-टूथ स्पीकर से सीखना, आनलाइन कक्षाएं, वर्चुअल रियालिटी, कोंफ्रेंस काल, मोबाइल गुरुजी, गूगल फॉर्म से सीखना, व्हात्सेप्प समूह से सीखना, किचन से विज्ञान, आनलाइन प्रयोगों का आयोजन, अमाराईट परियोजना, कमीशीबाई के माध्यम से कहानी सुनाना, कठपुतली के माध्यम से सीखना, प्रिंट-रिच गाँव-वार्ड जैसे बहुत से नवाचारों को विस्तार करने का अवसर मिला।

इन सबको और इस बार के लाकडाउन में शिक्षकों द्वारा सुझाए गए कुछ और नवाचारों को लेकर उनका विस्तार कर बच्चों का सीखना जारी रखा जा सकता है।

एजेंडा चार: बच्चों के रचनात्मक कौशल का विकास

सेजेस बलौदाबाजार की प्राचार्या **श्रीमति ऋतू शुक्ला** (8109166097) द्वारा बच्चों के लेखन कौशल के विकास हेतु स्थानीय स्तर पर अखबार से संपर्क कर बच्चों को अखबार का कोरा लेआउट मंगवाकर उसमें पूर्व से प्रदत्त विभिन्न टोपिक पर बच्चों के आलेख लिखवाकर उसे एक अखबार का रूप दिया जाता है।

इस पूरी प्रक्रिया से बच्चे स्वयं उस खाली अखबार के ले-आउट को डिजाइन करते हैं। उसे अखबार का रूप देकर उसे भेजा जाता है। इनमें से अखबार द्वारा बेस्ट आलेखों का चयन कर उन्हें जूनियर एडिटर के रूप में पहचान दिलाते हुए प्रोत्साहित करते हैं। ऐसा करने से बच्चों के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होती है।

पढ़ई तुंहर दुआर 2.0 में बच्चों के पठन, लेखन, गणितीय, प्रयोग करने एवं मिलकर छोटे छोटे समूहों में प्रोजेक्ट कार्य करने के कौशलों का विकास करने एवं उन्हें समुदाय के माध्यम से प्रोत्साहित करने हेतु पहल की गयी है। इसे निरंतर जारी रखा जाना होगा। सौ दिवसीय अभियान के माध्यम से भी कुछ इसी प्रकार के प्रयास जारी रखा जा रहा है।

कोरोना के दौरान सबसे अधिक नुकसान बच्चों के लेखन कौशल का हुआ है। इसे सुधारने एवं इस कमी को दूर किए जाने हेतु समय समय पर ऐसे कुछ प्रयास आवश्यक हैं।

बच्चों को लाकडाउन के दौरान लेखन कौशल विकास हेतु घर पर रहकर अभ्यास करने हेतु नियमित रूप से असाइनमेंट देते हुए बच्चों को देते हुए उनके प्रदत्त कार्य को पूरा कर उनकी जाँच कर उन्हें वास्तविक फीडबैक देते हुए सुधार हेतु निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। लाकडाउन अवधि में शिक्षकों को इस पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

जेंडा पांच: स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार हेतु आवेदन

स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2021-22 में सभी शालाओं को इस वर्ष आवेदन करना है। जल, सफाई और स्वच्छता के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि प्राप्त करने वाले शालाओं को जिला स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत किया जायेगा। यह पुरस्कार स्टार रेटिंग पर आधारित है जिसमें 5-स्टार उत्कृष्ट और 1-स्टार सबसे खराब प्रदर्शन है। आप इस पुरस्कार के लिए आवेदन शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के वेब साईट पर अंकित 'स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2021-22' वेब पोर्टल या मोबाइल एप्लीकेशन 'स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2021-22' के माध्यम से कर सकते हैं। मोबाइल एप्लीकेशन गूगल प्ले स्टोर या एप्पल ऐप स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। पूर्व के आयोजित स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार में छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा सराहनीय कार्य किया गया था।

आशा है कि स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2021-22 में जिला अपने पूर्व के प्रदर्शन से आगे बढ़ते हुए इस पुरस्कार के लिए शत प्रतिशत शालाओं का आवेदन करेंगें और राष्ट्रीय स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार प्राप्त करने में सफल होंगें।

इस पुरस्कार में आवेदन भरे जाने की प्रक्रिया के अध्ययन के लिए संकुल एवं विकासखंड स्तर पर एक टीम बनाकर उन्हें वेबसाईट https://swachhvidyalayapuraskar.com/ में जाकर पूरी प्रक्रिया का अध्ययन करने हेतु निर्देशित करें। इस टीम को पूरे संकुल अथवा विकासखंड में सभी स्कूलों में इस फॉर्म को भरने हेतु जिम्मेदारी देवें। संकुल में सभी स्कूलों को एक स्थल पर बुलाकर प्रत्यक्ष में भी फॉर्म भरवाया जा सकता है।

इस कार्य को सबसे पहले पूरा करने की चुनौती मुंगेली की विकासखंड शिक्षा अधिकारी **श्रीमती प्रतिभा मंडलोई** (9893240294) एवं महासमुंद विकासखंड के बीआरसीसी **श्री जागेश्वर सिन्हा** (9993731005) ने ली है। उनकी इस पहल को देखकर अन्य विकासखंड के अधिकारी भी सामने आयेंगे और हमारे प्रदेश में स्वच्छता पुरस्कार के लिए सबसे अधिक प्रविष्टि का रिकार्ड स्थापित कर सकेंगे।

श्रीमती प्रतिभा मंडलोई

श्री जागेश्वर सिन्हा

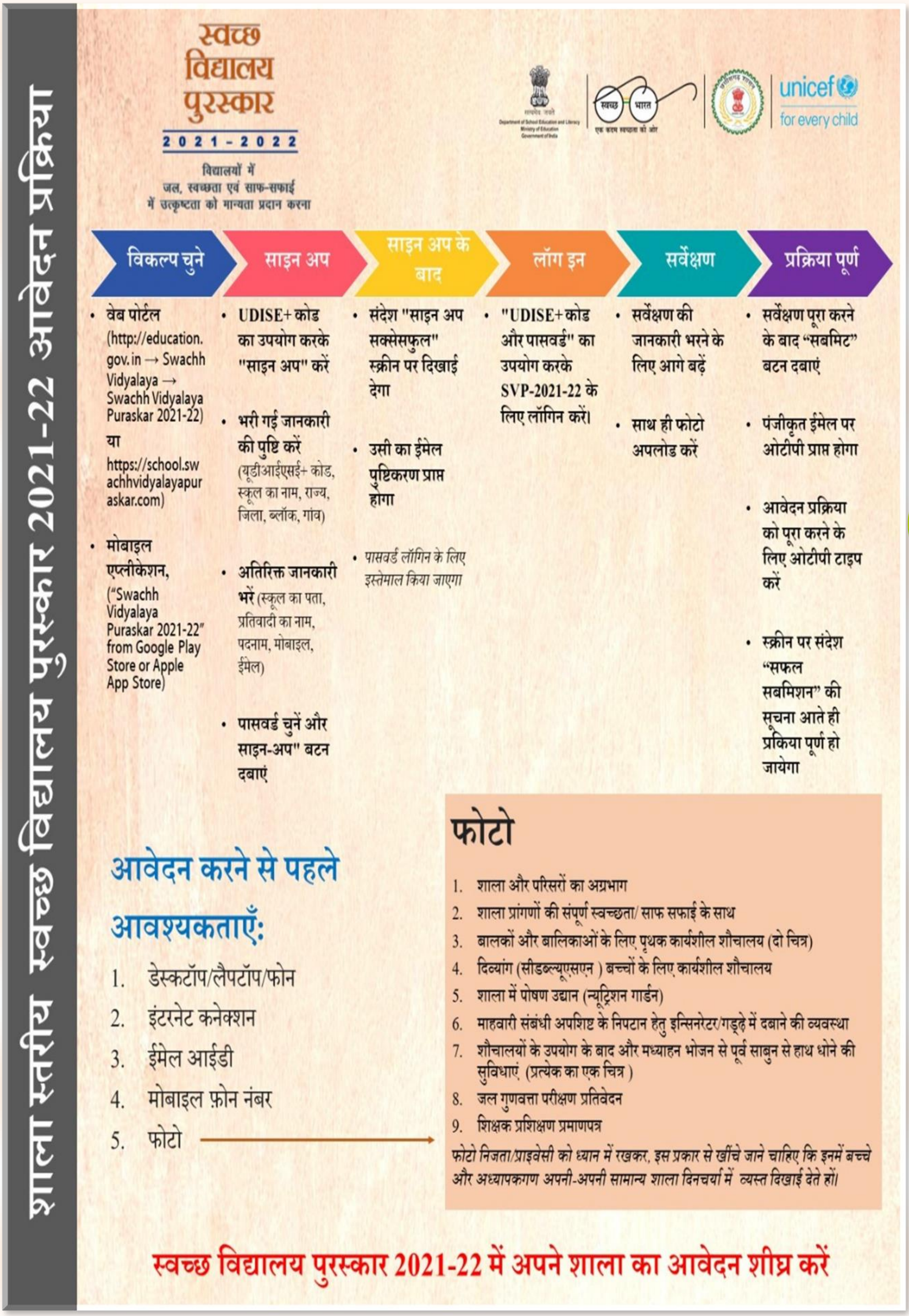

शाला स्तरीय स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2021-22 आवेदन प्रक्रिया

स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार
2021-2022

विद्यालयों में
जल, स्वच्छता एवं साफ-सफाई
में उत्कृष्टता को मान्यता प्रदान करना

unicef
for every child

विकल्प चुने

- वेब पोर्टल (http://education.gov.in → Swachh Vidyalaya → Swachh Vidyalaya Puraskar 2021-22) या https://school.swachhvidyalayapuraskar.com)
- मोबाइल एप्लीकेशन, ("Swachh Vidyalaya Puraskar 2021-22" from Google Play Store or Apple App Store)

साइन अप

- UDISE+ कोड का उपयोग करके "साइन अप" करें
- भरी गई जानकारी की पुष्टि करें (यूडीआईएसई+ कोड, स्कूल का नाम, राज्य, जिला, ब्लॉक, गांव)
- अतिरिक्त जानकारी भरें (स्कूल का पता, प्रतिवादी का नाम, पदनाम, मोबाइल, ईमेल)
- पासवर्ड चुनें और साइन-अप" बटन दबाएं

साइन अप के बाद

- संदेश "साइन अप सक्सेसफुल" स्क्रीन पर दिखाई देगा
- उसी का ईमेल पुष्टिकरण प्राप्त होगा
- *पासवर्ड लॉगिन के लिए इस्तेमाल किया जाएगा*

लॉग इन

- "UDISE+ कोड और पासवर्ड" का उपयोग करके SVP-2021-22 के लिए लॉगिन करें।

सर्वेक्षण

- सर्वेक्षण की जानकारी भरने के लिए आगे बढ़ें
- साथ ही फोटो अपलोड करें

प्रक्रिया पूर्ण

- सर्वेक्षण पूरा करने के बाद "सबमिट" बटन दबाएं
- पंजीकृत ईमेल पर ओटीपी प्राप्त होगा
- आवेदन प्रक्रिया को पूरा करने के लिए ओटीपी टाइप करें
- स्क्रीन पर संदेश "सफल सबमिशन" की सूचना आते ही प्रकिया पूर्ण हो जायेगा

आवेदन करने से पहले आवश्यकताएँ:

1. डेस्कटॉप/लैपटॉप/फोन
2. इंटरनेट कनेक्शन
3. ईमेल आईडी
4. मोबाइल फ़ोन नंबर
5. फोटो →

फोटो

1. शाला और परिसरों का अग्रभाग
2. शाला प्रांगणों की संपूर्ण स्वच्छता/ साफ सफाई के साथ
3. बालकों और बालिकाओं के लिए पृथक कार्यशील शौचालय (दो चित्र)
4. दिव्यांग (सीडब्ल्यूएसएन) बच्चों के लिए कार्यशील शौचालय
5. शाला में पोषण उद्यान (न्यूट्रिशन गार्डन)
6. माहवारी संबंधी अपशिष्ट के निपटान हेतु इन्सिनरेटर/गड्ढे में दबाने की व्यवस्था
7. शौचालयों के उपयोग के बाद और मध्याहन भोजन से पूर्व साबुन से हाथ धोने की सुविधाएं (प्रत्येक का एक चित्र)
8. जल गुणवत्ता परीक्षण प्रतिवेदन
9. शिक्षक प्रशिक्षण प्रमाणपत्र

फोटो निजता/प्राइवेसी को ध्यान में रखकर, इस प्रकार से खींचे जाने चाहिए कि इनमें बच्चे और अध्यापकगण अपनी-अपनी सामान्य शाला दिनचर्या में व्यस्त दिखाई देते हों।

स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2021-22 में अपने शाला का आवेदन शीघ्र करें

एजेंडा छह: मूलभूत कौशल विकास हेतु सामग्री तैयार करना

बलरामपुर से **सोनू सिंह** **(9589445580)** - लाकडाउन तथा अवकाश के दौरान सभी शिक्षकों को अपने विद्यालय एवं छात्रों हेतु कम से कम एक मॉडल या चार्ट बनाने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। इससे समय का सदुपयोग किया जा सकेगा और विद्यालय पुन: खुलने पर उनका उपयोग बच्चों के शिक्षण हेतु किया जा सकेगा। उन मॉडलों एवं चार्ट को अन्य शिक्षक भी आवश्यकता के अनुसार अपनी कक्षाओं में उपयोग कर सकेंगे। विद्यालय तथा ब्लॉक स्तर पर शिक्षकों के लिए Teaching - Learning Material बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जा सकता है जिससे कि सभी शिक्षक प्रेरित हों।

जिला स्तर या ब्लॉक स्तर पर कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें की ट्रेनर बुलाने के बजाए शिक्षकों को एक दिन केवल शिक्षण में आने वाली समस्याओं को बताने के लिए कहा जाए और अगले दिन के लिए उन्हें कहा जाए कि कार्यशाला में बताए गए किसी एक समस्या पर समाधान ले कर आयें जिससे यह होगा कि शिक्षक ही शिक्षकों की समस्याओं का समाधान कर देंगे और अंतिम के दो दिन शिक्षकों को स्वयं के द्वारा बनाए गए नवाचारों को प्रदर्शित करने का अवसर दिया जाए जिससे कि शासन एवं शिक्षा विभाग को भी स्कूलों के लिए कुछ नवाचार मिल जाएंगे और जमीनी स्तर पर शिक्षण में आने वाली समस्याओं का समाधान हो सकेगा।

संकुल एवं विकासखंड स्तर पर निम्नलिखित सामग्री तैयार करने हेतु इस प्रक्रिया का पालन कर लाकडाउन के समय का बेहतर उपयोग किया जा सकेगा-

1. छोटे बच्चों – आंगनबाडी से कक्षा 3 री तक के लिए उनके स्तर अनुरूप स्थानीय कहानियाँ बनाकर आकर्षक चित्रों के साथ राज्य परियोजना कार्यालय को प्रचार हेतु उपलब्ध करवाना।
2. छोटे बच्चों को खेल-खेल में सीखने हेतु स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री से खिलौने बनाने की पुस्तक बनाना जिसमें खिलौने बनाने के प्रक्रिया के वीडियो भी क्यू-आर कोड में हो।
3. माह जनवरी के चर्चा पत्र में साझा किए गए दस एजेंडा के आधार पर स्थानीय सामग्री तैयार कर उसकी डिजाइन कर राज्य परियोजना कार्यालय के साथ साझा करना।
4. छोटे बच्चों को भाषा एवं गणित सीखने हेतु विभिन्न स्तरों के लिए वर्कशीट्स बनाना।

एजेंडा सात: विद्यान्जली कार्यक्रम का क्रियान्वयन

प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल अपनी जरूरतों के लिए अब सिर्फ सरकार पर ही निर्भर नहीं रहेंगे। सरकारी व अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में शिक्षक, सामग्री, उपकरण जैसी अन्य आवश्यकताएं निजी क्षेत्र से भी पूरी की जा सकती है। इसके लिए स्कूलों को सिर्फ संबंधित पोर्टल पर लॉगइन करके अपनी जरूरतों को अपलोड करना होगा। पंजीकृत स्वयंसेवक अपनी पसंद के स्कूल-कॉलेजों में आवश्यकतानुसार ज्ञान व कौशल की मांग पूरी कराएंगे। इस योजना का उद्देश्य शासकीय व अशासकीय सहायता प्राप्त प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का ज्ञान व कौशल बढ़ाने के लिए उनकी जरूरतें जैसे उपकरण, सामग्री सहित अन्य संसाधन पूरा किया जाना है।

योजना के तहत चिह्नित विद्यालयों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकार के आगे हाथ नहीं पसारना होगा। अब यह काम पंजीकृत स्वयंसेवक यानी निजी क्षेत्र से पूरा कराया जाएगा। इसके तहत पोर्टल पर पंजीकृत स्वयंसेवक अपनी पसंद के विद्यालयों से सीधे जुड़ेंगे, स्कूलों में ज्ञान व कौशल को साझा करेंगे और सहायता के रूप में जरूरत के हिसाब से उपकरण व सामग्री बिना धनराशि सौंपे उपलब्ध कराएंगे। विद्यांजलि वेब-पोर्टल https://vidyanjali.education.gov.in में राज्य के सभी सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों को रजिस्टर्ड करना है।

विद्यांजलि 2.0 के तहत दानकर्ता और सेवा प्रदाता का भी पंजीकरण किया जाना होगा। दानकर्ता और सेवा प्रदाता को भी वालंटियर रजिस्ट्रेशन साइट में पंजीकृत करना है।

इस योजना के अंतर्गत विषय शिक्षक, कला क्राफ्ट शिक्षण, योग सिखाना, विभिन्न व्यवसायों की शिक्षा, केरियर काउंसिलिंग, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहयोग दिया जा सकता है।

इस योजना में सामग्री के रूप में निर्माण कार्य, बिजली के उपकरण, कक्षा में उपयोग हेतु सामग्री, डिजिटल सामग्री, खेल सामग्री, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा से संबंधित सामग्री, मरम्मत एवं देखरेख हेतु समर्थन, कार्यालयींन सहयोग, आवासीय विद्यालयों हेतु सामग्री आदि भी क्रय कर स्कूलों को उपलब्ध करवाया जा सकता है।

राज्य में स्मार्ट कक्षा, शिक्षा सारथी के माध्यम से सहयोग, पुस्तकालय में पठन सामग्री-बाल मैगजीन का सब्स्क्रिस्प्शन, स्थानीय खेल सामग्री, निर्माण कार्य, मरम्मत आदि का विवरण इसमें प्रविष्ट कर अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक स्कूलों को इस कार्यक्रम में लाभ दिलवाकर उसका विवरण वेबसाईट में डलवा सकते हैं। उम्मीद है कि इस लाकडाउन में इस वेबसाइट का अध्ययन कर अधिक से अधिक संख्या में छत्तीसगढ़ अपनी उपस्थिति दिखा सकेगा। देखें कि कौन सा विकासखंड इस योजना में बाजी मारता है और सबसे अधिक प्रविष्टि वेबसाईट में कर राज्य का नाम रौशन करता है।

एजेंडा आठ: आउटकम बढाने हेतु विभिन्न प्रयास

जशपुर से **सरिता अग्रवाल** **(8889876300)** लाकडाउन के दिनों में बच्चों के घरों में सीखने का कोना बनाकर बच्चों को घर पर रहकर सीखने के लिए उचित वातावरण बनाए जाने की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता महसूस करती हैं। उनका मानना है कि सभी शिक्षकों को इस दिशा में काम करना चाहिए और बच्चों के पालकों से संपर्क करना चाहिए। बच्चों को शाला में उपलब्ध चार्ट, पोस्टर्स के अलावा प्रिंट-रिच वातावरण, मुस्कान पुस्तकालय की पुस्तकें आदि भी देते रहना चाहिए।

कोरबा से **श्री ओमप्रकाश कंवर** **(9406354197)** ने लाकडाउन की अवधि में डेली होम वर्क बनाकर बच्चों तक पहुँचाना, उनके उत्तर लेकर जांचना, TLM- को ऑनलाइन या ऑफलाइन दिखाना , प्रतिदिन ऑनलाइन/ऑफलाइन बच्चों से मिलना, बच्चों के संपर्क में रहना आदि करते हुए उनकी उपलब्धि में सुधार हेतु निरंतर प्रयास करते रहने का सुझाव दिया है।

बस्तर से **श्री गोविन्द नायडू** **(9691595188)** लॉकडाउन के दौरान बच्चों को छोटे-छोटे ग्रुप में अलग अलग समय में अलग अलग शिक्षकों के पास अलग अलग स्थान में एक एक घंटे के रोटेशन के आधार पर मोहल्ला कक्षाओं के आयोजन का सुझाव दे रहे हैं।

एजेंडा नौ: टेलेंट हंट

हमारे राज्य में स्कूलों में बहुत से बच्चे ऐसे हैं जिनमें जन्मजात टेलेंट मिला हुआ है या उन्हें थोड़ा सा ग्रूम किया जाए तो बहुत अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। ऐसे टेलेंटेड बच्चों को ढूंढकर उन्हें सामने लाने, प्रोत्साहित करने एवं उनके टेलेंट को ग्रूम करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। बिलासपुर के कक्षा छठवीं के छात्र श्री हर्ष रजक ने बिना किसी प्रशिक्षण के बहुत उम्दा क्वालिटी के चित्र बनाना सीख लिया है। उसके टेलेंट को हम सभी ने राष्ट्रीय कोंफ्रेंस में देखा जब उन्होंने मिनटों में माननीय शिक्षा मंत्री जी की पोट्रेट बनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

गायन में सबसे अधिक तेजी से फैन के क्षेत्र में चाहें सुकमा के सहदेव दिरदो हो, पंडवानी के क्षेत्र में रायपुर की कु. दुर्गा साहू हो, इन सबको बस थोड़े से सपोर्ट, प्रोत्साहन की आवश्यकता है, वे बहुत आगे बढ़ सकते हैं। क्या हम लाकडाउन के दौरान के दौरान अपने आसपास ऐसे टेलेंटेड बच्चों की पहचान कर उनके टेलेंट को ग्रूम करने में सहयोग कर सकते हैं। चलिए अपने आसपास टेलेंट हंट करें। ऐसे बच्चों की मदद करें।

एजेंडा दस: लाकडाउन के दौरान कुछ विशिष्ट कार्य हेतु शिक्षकों के सुझाव

- कोरबा के शिक्षक **श्री शान्ति लाल कश्यप** (8889385482) समुदाय के साथ मिलकर उनके द्वारा मनाए जा रहे विभिन्न त्यौहारों, स्थानीय लोकगीत जैसे सुवा गीत एवं नाच, कर्मा गीत एवं नाच, गौरा गौरी कहानियाँ, भोजली गीत, छेरछेरा गतिविधि, डंडा नाच, सैला नाचा आदि गतिविधि को विडियो क्लिप के माध्यम से तैयार कर बच्चों तक पहुंचाते हुए उन्हें अपने स्थानीय त्यौहारों एवं परंपराओं के बारे में जानकारी देते हुए उन पर चर्चा करने का अवसर देते हैं।

- जांजगीर-चांपा से **श्री रवीन्द्र राठोर** (9981926903) लॉकडाउन के दौरान शिक्षक स्कूल में रहकर पाठ योजना बनाना, वर्क शीट तैयार करना, पालकों से फोन के माध्यम से अध्ययन की प्रगति की रिपोर्ट लेना, प्रतिदिन बच्चों से जुड़कर उनसे पढ़ाई के संबंध में चर्चा करना जैसे कार्य कर सकते हैं।

- कोरिया से **श्री राजकुमार पाल** (7828694476) लाकडाउन के दौरान खाली रहने पर TLM निर्माण, मुस्कान पुस्तकालय को व्यवस्थित करना, विभिन्न शैक्षिक बिंदुओं पर कंटेंट रायटिंग का काम, शैक्षिक वीडियो तैयार करना, प्रश्न बैंक तैयार करना, प्रिंट रिच वातावरण निर्माण जैसे काम कर सकते हैं।

- जशपुर के **प्रेमशीला यादव** (6268877183) स्कूल में रहकर चर्चा पत्र के विभिन्न अंकों का अध्ययन कर उनमें बताए गए विभिन्न बातों को अपने कार्य-व्यवहार में लागू किया जा सकता है। शिक्षकों को आपस में चर्चा कर सभी बातों पर अमल करने की दिशा में गंभीरता से काम किया जाना चाहिए।

- राजनांदगाँव से **शिवकुमार मोहबेकर** (8085593483) बच्चों को सप्ताह में एक दिन उनकी होबी की कक्षा लगाने और उन्हें अपनी कला का प्रदर्शन करने के अवसर देते हुए प्रोत्साहित करने का सुझाव पसंद है।

- बालोद के **श्री मारूति शर्मा** (8959583001) का मानना है कि लाकडाउन की अवधि में शिक्षकों को विद्यालय में उपलब्ध उद्यान/ किचन गार्डन का प्रबंधन या यदि किचन गार्डन न हो तो उपलब्ध स्थान पर यथायोग्य उद्यान निर्माण का प्रयास करना चाहिए।

- जशपुर से **सुनील कुमार** (9131043247) का सुझाव है कि विद्यालय के चार से पांच बच्चों को जिन की विषय वस्तु पर समझ अच्छी हो उन्हें बुलाकर अपने पारा मोहल्ले के दो दो बच्चों को सिखाने का जिम्मा दिया जाना चाहिए और उनको तैयार कर उनके माध्यम से शेष बच्चों को तैयार करना चाहिए।

- धमतरी के **श्री जिआउद्दीन मुग़ल** (9907504809) को विभिन्न अवधारणाओं को स्पष्ट करने हेतु नोट बनाकर तैयारी करने का आइडिया पसंद है।

- कोरबा से प्राचार्या **डॉ अनिता सिंह** (9406441330) अपने शाला में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के साथ परिचर्चाओं का आयोजन, शाला विकास योजना बनाकर उसमें नए नए आइडियाज डालने में विश्वास रखती हैं।

- गौरेला पेन्ड्रा मरवाही से **श्वेता रंजन** (9406250759) ने बच्चों को छोटे-छोटे प्रोजेक्ट कार्य देते हुए उन्हें सीखने के अवसर दिए जाने का सुझाव दिया है।

- बिलासपुर से **श्री निशांत कुरैशी** (9770753345) कहते हैं "मुझे हमेशा से लगता है की पढ़ाई के साथ बच्चे ऐसी कलाएं सीखे जो भविष्य में आवश्यकतानुसार जीवन यापन का स्रोत बन सकें। इस हेतु मैंनें उन्हें शाला के दौरान भेल ,सेण्डविच बनाना ,घर की उपलब्ध सामग्री से हेल्दी अंकुरित सलाद आदि व कलात्मक वस्तुए बनाना जैसे पेपर लैंप शेड निर्माण ,पेपर बैग निर्माण , मिट्टी के दिए निर्माण ,पतंग व पेपर क्राफ्ट निर्माण सिखाती हूं। इस तरह के छोटे एसाइंनमेंट वाट्सअप ग्रुप विडियो बनाकर विधि सहित भेज सकते हैं, तथा वर्चुअल वर्कशाप आयोजित कर सकते हैं।"

- बालोद से **श्री टोमन सिंह** (9589304727) ने पिछली कक्षाओं जिसमे बच्चों की पढ़ाई नही हो पाई है, उससे संबंधित प्रश्न तैयार कर बच्चों को वाट्सअप ग्रुप के माध्यम से भेजते हुए उनसे हल करवाए जाने का सुझाव भेजा है। वे बच्चों को घर पर रहकर सीखने के लिए अंग्रेजी के शब्दकोश बनाकर भी देना चाहते हैं।

- दुर्ग से **श्रीमती प्रज्ञा सिंह** (9424100833) स्वयं को TLM निर्माण में व्यस्त रखती हैं। उन्होंने अपने स्कूल में सैकड़ों की संख्या में टी एल एम निर्माण कर उपयोग करना जारी रखा है। उनके अनुसार, "अभी हमारे पास पर्याप्त समय रहता है तो हम TLM का निर्माण कर सकते हैं और मैं इस पर कार्य कर भी रही हूँ, मैं प्रत्येक टॉपिक पर TLM निर्माण कर उसका वीडियो बनाकर बच्चों को भेज रही हूँ, जिसे बच्चे अपनी सुविधा के अनुसार देख सकते हैं।"

- धमतरी से **एस आर कुरैशी** (6264509119) का मानना है कि सभी शिक्षक मिल कर किसी टॉपिक पर वीडियो बना सकते है. उसमें शिक्षकों को एक्टिंग करना है. जिससे बच्चों के लिए काफी रुचिकर वीडियो बनेगा और वो जल्दी सीखेंगे... क्योंकि अपने शिक्षको को एक्टिंग करते हुए देखना बहुत ही रोमांचक होगा...

- जशपुर से **युधिष्ठिर बारीक** (7974641773) के अनुसार शिक्षक स्कूल में रहकर बच्चों के लिए खिलौनों का निर्माण कर सकते हैं। गणित, पर्यावरण अंग्रेजी और हिन्दी विषयों के लिए अलग अलग टी एल एम सामग्री तैयार कर बच्चों को सिखाया जा सकता है। जिससे बच्चे खेल खेल में किसी ठोस अवधारणा को सीख सकें, बच्चों कि बुनियादी दक्षता में सुधार हेतु विभिन्न प्रकार के सामग्री निर्माण किया जा सकता है। बच्चों के भाषा विकास हेतु हिन्दी के शब्दों को उनकी मातृभाषा में लिखकर एवं उसी शब्दों को अंग्रेजी भाषा में लिख कर बताने हेतु विभिन्न प्रकार के वाक्य चार्ट का निर्माण भी किया जा सकता है।

- कबीरधाम से **मोनू गुप्ता** (8120986685)- बच्चों के द्वारा शाला नही आने पर हम शिक्षक समुदाय से मिलकर अलग अलग प्रकार की कहानियाँ, पारंपरिक गीत और विभिन्न प्रकार के रीति रिवाज परम्पराएं, गाँव का इतिहास आदि की विस्तृत जानकारी एकत्र कर सकते हैं। जिन्हें हम अपने शाला के बच्चों से मोबाइल के माध्यम से रिकार्ड कर सकते हैं। जिससे बच्चे अपने गाँव के बड़े-बुजुर्गों द्वारा सुनाई गयी कहानियों को रिकार्ड कर सभी को सुना सकते हैं।